B.S.N.V. P.G. College, Charbagh Lucknow

Department of History (MIH)

(B.A. III Semester) Paper II (History of Europe)

Syllabus

HISTORY OF EUROPE (1789-1848)

Lecture on Causes of French Revolution1789 **Dr. Nilima Gupta**

फ्रांस की क्रान्ति का प्रारम्भ (Outbreak of the French Revolution)

लुई सोलहवें के शासनकाल में फ्रांस पर आर्थिक संकट एवं दिवालियापन के बादल छाये थे लुई द्वारा एक के बाद एक नियुक्त अर्थ मंत्री फ्रांस की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान नहीं कर सके।

- तुर्गो (TURGOT-1774-76)
- नेकर (NECKER – 1776-81)
- कालोन (CALONNE -1783-87)
- ब्रीएन (BRIENNE -1787-88)
- नेकर (NECKER – 1788)

लुई ने अध्यादेशो द्वारा शासन करना चाहा किन्तु पेरिस की पार्लेमा ने राजा द्वारा लगाये करों को मानने से इनकार कर दिया –

1. राजा को न्यायाधिशों को बर्खास्त करने का अधिकार नहीं है।
2. प्रत्येक गिरफ्तार व्यक्ति की सुनवाई उचित न्यायालय में होनीं चाहिए।
3. प्रांतीय पार्लेमा के अधिकार शाश्वत है।

विवश हो कर लुई 16वें ने स्टेटस् जनरल का अधिवेशन बुलाया।

– फ्रांस में स्टेटस् जनरल की स्थापना 1320 में हुई थी। वर्ष में एक बार या जरुरत पड़ने पर अनेक बार अधिवेशन बुलाया जा सकता था।

– प्रत्येक प्रतिनिधि अपने–अपने क्षेत्र की समस्याओं व निदान इस सभा में प्रस्तुत करता था।

– इसका अन्तिम अधिवेशन 1614 में हुआ था।

– अब लगभग 175 वर्षों के बाद अधिवेशन बुलाया जा रहा था।

– स्टेटस् जनरल में तीन सदन थे – कुलीन वर्ग, पादरी वर्ग और जनसाधारण वर्ग।

– तीनों सदनों के सदस्यों की संख्या समान थी।

स्टेटस् जनरल का अधिवेशन प्रारम्भ (Benning of the Session of Estates General)

1789 में स्टेटस् जनरल का चुनाव सम्पन्न हुआ।

– कुलीन वर्ग – 285

– पादरी वर्ग – 308

– जनसाधारण वर्ग – 621

05 मई 1789 को स्टेटस् जनरल का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ 60 हजार काये (समस्याओं का मसविदा) के माध्यम से प्रमुख मांग रखी गई –

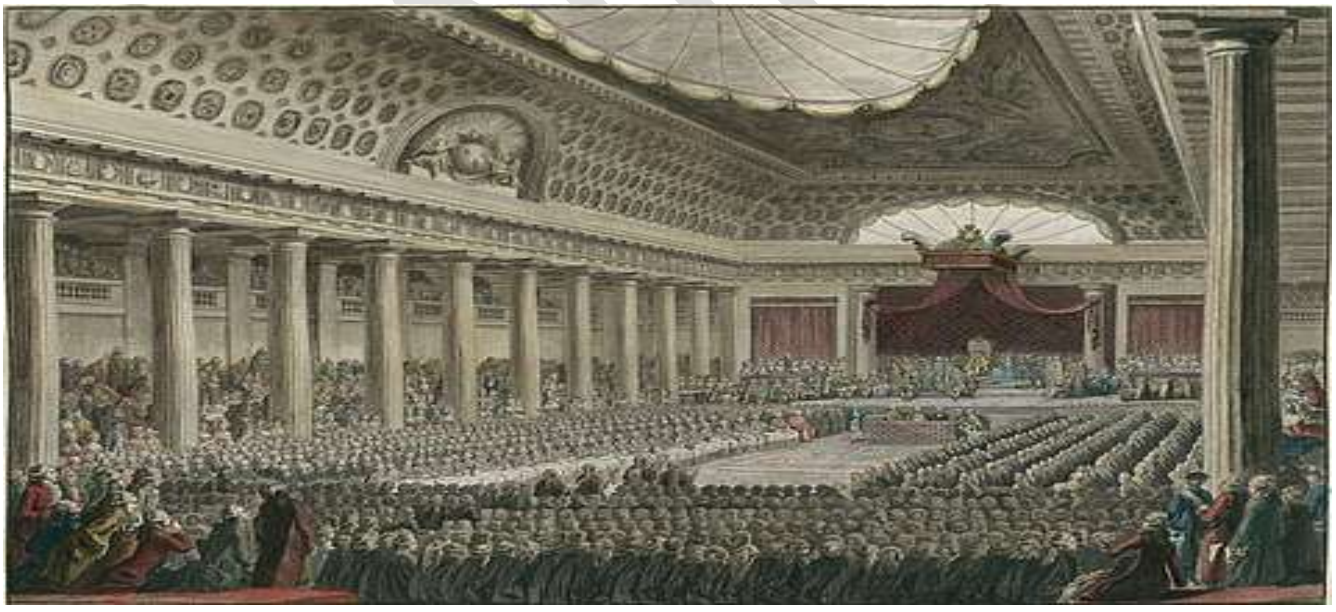

- राजा और नागरिकों के अधिकारों की घोषणा की जाये।
- प्रेस की स्वतंत्रता।
- समान कर व्यवस्था।
- सामन्ती करों की समाप्ति।
- बेगार प्रथा का समापन।

प्रमुख घटनायें –

टेनिस कोर्ट की सपथ (Oath of Tennis Court) 20 June 1789

- **12 जून 1789** को सिए (SIEYES) ने कुलीन एवं पादरी वर्ग से जनसाधारण वर्ग में सम्मिलित होने का आग्रह किया किन्तु दोनो ही वर्ग सहमत नहीं हुए।
- जिलेट **(JALLET)** के नेतृत्व में छोटे पादरी जनसाधरण वर्ग में सम्मिलित हो गये।
- फलतः जनसारण वर्ग ने एक प्रस्ताव पारित कर के स्वंय को राष्ट्रीय सभा (NATIONAL ASSEMBLY) घोषित कर दिया जो फ्रांस की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था बनी। मेडलिन ने लिखा है – "यह क्रान्ति का प्रथम चरण था।" (Medelin- this was the first step of the revolution) लुई को यह घटना पसन्द नहीं आई इस लिए मित्रों की सलाह पर जनसाधारण वर्ग के सभा भवन को 20 जून 1789 को बन्द करा दिया और कहा गया कि वे 23 जून तक अपना अधिवेशन

स्थगित रखें। परन्तु 20 जून को ही जनसाधारण वर्ग के 600 सदस्य सभा भवन पहुंच गये।

– बहुत तेज बारिश हो रही थी

– बारिश से बचने के लिए इन सदस्यों ने एक भवन में शरण ली जो टेनिस खेलने के काम आता था।

– सदस्य जोश में भरे हुए थे उन्होंने बेली (BAILLY) के नेतृत्व में शपथ ली – जबतक वे फ्रांस के लिए नवीन संविधान की रचना नहीं कर लेते वे स्वंय को भंग नहीं होने देंगे (BAILLY- they would never allow themselves to be dissolved until the constitution had been stabilised and set on fine foundation) इसे टेनिस कोर्ट की शपथ कहा गया।

संयुक्त अधिवेशन (JOINT SESSION)

23 जून 1789 को लुई 16वें में तीनों वर्गों संयुक्त अधिवेशन आमंत्रित किया। राजा ने घोषणा की–

- जनसाधारण वर्ग के कार्य अवैध व असंवैधानिक है।
- तीनों वर्ग अलग–अलग विचार विमर्श करें।

पहला और दुसरा सदन अपने अपने सभागार में चले गये किन्तु साधारण वर्ग बैठा रहा। उत्सवों के अध्यक्ष ड्यू ब्रे (DREUX BREZE) ने उन्हें वहां से जाने को कहा तो मिराब्यू (MIRADEAU) ने कहा "महानुभावो ! आपने प्रस्तावों को सूना, परन्तु उन्हें कार्यान्वित करने की आज्ञा कौन देगा ? ये आज्ञायें जनता की प्रतिनिधि देगे।" उसने पुनः कहा यहां हम राष्ट्र की इच्छा से एकत्र हुए है केवल ताकत ही हमें तितर–बितर कर सकती है। (MIRADEAU- Go, tell your master that we are here by the will of the people and that we shall not leave except at the point of baynoet)

अन्ततः विवश हो कर लुई को जनसाधारण की बात माननी पड़ी। 27 जुन 1789 को तीनों सदनों को एक बनाने की घोषणा कर दी गयी और राष्ट्रीय सभा को मान्यता प्रदान कर दी गयी। इस प्रकार सम्प्रभुता राजा के हाथ से निकल के जनता के हाथ में आ गयी। केटल्वी ने लिखा है कि यह जनता की प्रथम विजय थी। राज्य सत्ता राजा के हाथों से निकल कर राष्ट्रीय सभा के हाथों में चली गयी थी।

बास्तील का पतन (FALL OF BASTILLE) 14 July 1789

लुई 16वें ने विवश हो कर राष्ट्रीय सभा को मान्यता प्रदान की थी वह तत्कालीन स्थिति को स्वीकार करने के लिए तैयार न था। लुई ने जनसाधारण को भयभीत करने के लिए विदेशी सैनिकों को पेरिस और वरसाये में तैनात कर दिया फलतः स्थिति तनावपूर्ण थी –

- 27 जून 1789 को बेरोजगारों ने कारखानों के मालिकों और व्यापारियों पर हमला कर दिया। लुई ने कठोरता पूर्वक दमन किया।
- 11 जुलाई 1789 को लुई ने अपने वित मंत्रि नेकर को उसके पद से हटा दिया और फ्रांस छोड़कर चले जाने की आज्ञा दी।
- जनता को विश्वास हो गया कि राजा कठोरता का रास्ता अपनाने जा रहा है।
- जनता ने लाफायेत (LAFAYETTE) के नेतृत्व में नागरिक सुरक्षा दल (CIVIL GUARDS) तथा बाद में राष्ट्रीय सुरक्षा दल (NATIONAL GUARDS) की स्थापना की।
- राष्ट्रीय सभा ने मिराव्यू के माध्यम से लुई को संदेश भिजवाया कि वह सैनिकों को वापस बुलवाले पर राजा ने इनकार कर दिया।

- कामिल देमूले (CAMILLE DESMOUTLIN) नामक पत्रकार ने जनता को शस्त्र से सुसज्जित रहने का आवाहन करते हुए कहा नेकर को पदच्यूत कर दिया गया है। राजा शीघ्र ही हमारे उपर आक्रमण करने की योजना बना रहा है, हमको अपनी रक्षा के लिए शस्त्र ग्रहण करने चाहिए।
- फलतः 10 हजार लोग एकत्र हो गये लुई 16वें के फ्रांसीसी सुरक्षा सैनिक व अंग रक्षक भी जनता के साथ हो गये।
- पेरिस से कुछ दुर एक छोटा सा किला जिसे बासतील कहा जाता था। इस किले में राजनीतिक कैदी रखे जाते थे। द लाने (DE LAWNEY) इस किले का गवर्नर था। इस दुर्ग में शस्त्रों का विशाल भण्डार था।
- 13 जुलाई 1789 को अफवाह फैली कि जनता की भावनाओं को कुचलने के लिए और अधिक सैनिक पेरिस भेजा जा रहा है।
- 14 जुलाई 1789 को जनता ने हथियार प्राप्त करने के लिए बासतील के किले पर आक्रमण कर दिया।
- 5 घन्टे संघर्ष चला जिसमें जनता के 200 व्यक्ति हताहत हुए अन्ततः जनता की जीत हुई। गवर्नर द लाने की हत्या कर दी गयी। किले के समस्त हथियारों पर जनता का अधिकार हो गया। राजनैतिक कैदी मुक्त कर दिये गये।
- 17 जुलाई 1789 को लुई 16वें स्वंय पेरिस पहुँचा, होटल डी विले में उसने वेली को पेरिस का मेयर और लफायत को राष्ट्रीय सुरक्षा अल का सैनापति स्वीकार किया।

बास्तील का पतन की घटना इस लिए महत्वपूर्ण है कि फ्रांस का राष्ट्रीय दिवस इसी घटना के आधार पर 14 जुलाई को मनाया जाता है। पेरिस अब क्रान्ति का केन्द्र बन गया था।

Dr. Nima

पेरिस की स्त्रियों का वार्साय अभियान

(WOMENS CAMPAIGN OF VERSAILLES) 05 October 1789

5 अक्टूबर 1789 को पेरिस से वार्साय की ओर प्रस्थान किया। ये स्त्रियां हमे रोटी दो (we want bread) के नारे लगा रही थी। वार्साय प्रस्थान के निम्न कारण थे–

–पेरिस में अन्न की कमी थी।

–1 अक्टूबर को वार्साय में एक शानदार दावत दी गयी थी।

–राजा व दरबारियों ने क्रान्ति के तिरंगे झण्डे को पांव से कुचला था।

–कुछ सैनिकों ने राजा को साथ देने की धोषणा की थी।

–लुई 16वां ने मानव अधिकारों की धोषणा को स्वीकृत नहीं किया था।

ठस समूह 6अक्टूबर को वार्साय पहुंचकर महल के फाटक तोड़ डाले।

राजा को पैरिस वापस लौटने के लिये विवश किया। राज परिवार और राजा को पेरिस एक पुराने महल ट्यूलरिज में रखा गया। इस प्रकार राजा जन समूह का बन्दी बनकर रह गया।

लुई 16 वें द्वारा भागने का प्रयास (LOUIS 16TH TRIES TO FLEE)

20 जून 1791 को राजा अपने पत्नी एवं पुत्र के साथ वेश बदलकर मेज (MEUSE) की ओर चल दिया, किन्तु वारेन नामक स्थान पर बन्दी बना लिया गया। 25 जून को वापस पेरिस पहुॅचा दिया गया। राजा द्वारा इसप्रकार भागने के प्रयास उसकी प्रतिष्ठा को गहरा धक्का पहुॅचा। राष्ट्रीय सभा ने निणर्य लिया की राजा के स्थान पर उसके सहायकों को दण्ड दिया जाय, लेकिन जब तक इसे कार्यान्वित किया जाता तब तक राजा के सहायक भाग गये।

Lecture on French Revolution to be continue …